भारत सरकार
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 116
दिनांक 2 फरवरी, 2024 को उत्तर के लिए

पोषण अभियान

116. श्री भर्तृहरि महताब :

क्या **महिला और बाल विकास** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगी किः

(क) क्या सरकार पोषण अभियान के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्य और उपलब्धियों के बीच व्यापक अंतर के बारे में अवगत है;
(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और
(ग) लक्ष्य और वर्तमान आकड़ों के बीच अंतर को कम करने के लिए सरकार द्वारा क्या उपाय किए गए हैं?

उत्तर
महिला एवं बाल विकास मंत्री
(श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी)

(क) से (ग): जी, नहीं महोदय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्वास्थ्य परिवार सर्वेक्षण (एनएचएफएस) में कुपोषण के संकेतकों जैसे अल्प वजन, बौनापन और दुर्बलता में लगातार सुधार दिखाया गया है। एनएफएचएस-5 (2019-21) की हालिया रिपोर्ट के अनुसार एनएफएचएस-4 (2015-16) की तुलना में 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों के पोषण संकेतक में सुधार हुआ है। बौनापन 38.4% से घटकर 35.5%, दुर्बलता 21.0% से घटकर 19.3% और कम वजन 35.8% से घटकर 32.1% हो गया है।

दिसंबर 2023 के पोषण ट्रैकर के आंकड़ों के अनुसार 6 वर्ष से कम उम्र के लगभग 8.91 करोड़ बच्चों का मापन किया गया जिनमें से 36% बौने और 17% कम वजन वाले तथा 5 वर्ष से कम उम्र के 6% बच्चे दुर्बल पाए गए। कम वज़न और दुर्बलता का स्तर एनएफएचएस 5 द्वारा अनुमानित स्तर से काफी कम है।

सरकार ने कुपोषण के मुद्दे को उच्च प्राथमिकता दी है और पोषण से संबंधित विभिन्न पहलुओं का सामाधान करने के उद्देश्य से राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के माध्यम से विभिन्न मंत्रालयों/विभागों की कई योजनाएं/कार्यक्रम क्रियान्वित कर रही है। 15वें एफसी में 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं, किशोरियों(14 - 18 वर्ष) के लिए पोषण संबंधी सहायता के घटक; बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा [3-6 वर्ष]; आधुनिक, उन्नत सक्षम आंगनवाड़ी, पोषण अभियान और किशोरियों के लिए योजना सहित आंगनवाड़ी बुनियादी ढांचे को मिशन सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 (मिशन पोषण 2.0) के तहत पुनर्गठित किया गया है। मिशन पोषण 2.0 में बौनापन और एनीमिया के अतिरिक्त दुर्बलता और कम वजन के प्रसार को कम करने के लिए मातृ पोषण, शिशु और छोटे बच्चे के आहार मानदंड, एमएएम/एसएएम के उपचार और आयुष पद्धतियों के माध्यम से कल्याण पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

मिशन पोषण 2.0 के तहत, अनुशंसित आहार सेवन की तुलना में सेवन में अंतर को कम करने के लिए देश भर में स्थित 13.97 लाख आंगनवाड़ी केंद्रों के नेटवर्क के माध्यम से लाभार्थियों को वर्ष में 300 दिन पूरक पोषण प्रदान किया जाता है। महिलाओं और बच्चों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की आवश्यकता को पूरा करने और एनीमिया को नियंत्रित करने के लिए आंगनवाड़ी केंद्रों को केवल फोर्टिफाइड चावल की आपूर्ति की जा रही है। 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों, गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए आंगनवाड़ी केंद्रों पर पका हुआ गर्म भोजन और टेक होम राशन (टीएचआर) तैयार करने के लिए मोटे अनाज के उपयोग पर अधिक जोर दिया जा रहा है।

पोषण 2.0 के उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- देश के मानव पूंजी विकास में योगदान देना;
- कुपोषण की चुनौतियों को दूर करना;
- स्थायी स्वास्थ्य और खुशहाली के लिए पोषण जागरूकता और अच्छी चीजें खाने की आदतों को बढ़ावा देना; और
- प्रमुख कार्यनीतियों के माध्यम से पोषण संबंधी कमियों को दूर करना।

शासन में सुधार के लिए पोषण ट्रैकर के तहत पोषण गुणवत्ता में सुधार और मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में परीक्षण, वितरण को मजबूत करने और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए कदम उठाए गए हैं। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को कुपोषण और संबंधित बीमारियों की रोकथाम के लिए आयुष प्रणालियों के उपयोग को बढ़ावा देने की सलाह दी गई है। पोषण संबंधी पद्धतियों में पारंपरिक ज्ञान का लाभ उठाते हुए आहार विविधता की कमी को दूर करने के लिए आंगनवाड़ी केंद्रों पर पोषण वाटिकाओं के विकास में सहायता करने के लिए एक कार्यक्रम भी आरम्भ किया गया है।

पोषण 2.0 के तहत संचालित प्रमुख गतिविधियों में से एक सामुदायिक एकजुटता और जागरूकता हिमायत है जो लोगों को पोषण संबंधी पहलुओं पर शिक्षित करने के लिए जन आंदोलन की ओर ले जाती

है। महत्वपूर्ण विषयों पर क्षेत्रीय भाषाओं में वीडियो, पैम्फलेट, फ़्लायर्स आदि के रूप में आईईसी सामग्री भी तैयार की गई है। विभिन्न मंत्रालयों/विभागों और अन्य हितधारकों के साथ मिलकर समुदाय आधारित कार्यक्रम, पोषण माह और पोषण पखवाड़ा आयोजित करके सामाजिक और व्यवहारिक परिवर्तन लाए गए हैं। अब तक राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा क्रमशः सितंबर और मार्च-अप्रैल के महीनों में मनाए गए 11 पोषण माह और पोषण पखवाड़ा के माध्यम से सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रमों के तहत 90 करोड़ से अधिक जागरूकता कार्यकलाप की जानकारी दी गई है। समुदाय आधारित आयोजनों (सीबीई) ने पोषण पद्धतियों को बदलने में महत्वपूर्ण कार्यनीति के रूप में कार्य किया है। सीबीई गर्भवती महिलाओं और दो वर्ष से कम आयु के बच्चों के जीवन में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करके और इसके साथ-साथ आहार विविधता के साथ उचित पूरक आहार सुनिश्चित करने के लिए सही समय पर महत्वपूर्ण जानकारी का प्रसार करने में सहायता करता है। अब तक लगभग 3.70 करोड़ समुदाय आधारित कार्यक्रम आयोजित किये जा चुके हैं।

इसके अतिरिक्त , महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने संयुक्त रूप से गंभीर कुपोषण वाले बच्चों की रोकथाम और उपचार के लिए सामुदायिक कुपोषण प्रबंधन (सीएमएएम) के लिए प्रोटोकॉल जारी किया, जिससे संबंधित रुग्णता और मृत्यु दर कम हो रही है। समुदाय-आधारित दृष्टिकोण में समुदाय में गंभीर कुपोषण वाले बच्चों का समय पर पता लगाना और जांच करना, बिना चिकित्सीय जटिलताओं वाले बच्चों के लिए घर पर सम्पूर्ण, स्थानीय पौष्टिक भोजन और सहायक चिकित्सा देखभाल के साथ प्रबंधन शामिल है। जिन कुपोषित बच्चों में चिकित्सीय जटिलताएँ होती हैं, उन्हें सुविधा-आधारित देखभाल के लिए भेजा जाता है।

*****